कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



धार्मिक सुधार और सार्वजनिक बहसें

- 19वीं सदी की शुरूआत से ही धार्मिक मामलों को लेकर बहसों का बाजार गर्म था।
- औपनिवेशिक समाज में हो रहे बदलावों से जूझते हुए, विभिन्न समूह धर्म की अपनी अपनी व्याख्या पेश कर रहे थे।
- कुछ तो मौजूदा रीति-रिवाजों की आलोचना करते हुए उनमें सुधार चाहते थे।
- जबकि कुछ अन्य समाज सुधारकों के तर्कों के खिलाफ खड़े थे।
- ये सारे वाद-विवाद प्रिंट में होने से सरेआम पब्लिक में हुए।
- छपी हुई पुस्तकों और अखबारों ने न केवल नये विचारों का प्रचार प्रसार किया बल्कि उन्होंने बहस की शक्ल भी तय की।
- इन बहसों में व्यापक जन-समुदाय भी हिस्सा ले सकता था, अपना मत जाहिर कर सकता था।
- इस तरह के मत मतांतर से नये विचार उभरे।
- यह वह समय था जब समाज और धर्म-सुधारकों तथा हिंदु रूढ़िवादियों की बीच विधवा-दाह, एकेश्वर वाद, ब्राह्मण पुजारी वर्ग तथा मूर्तिपूजा जैसे मुद्दों को लेकर तेज बहस ठनी हुई थी।
- बंगाल में जैसे-जैसे बहस चली, लगातार बढ़ती तादाद में पुस्तकों ओर अखबारों के जरिये तरह तरह के तर्क समाज के बीच आने लगे।
- ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचने के ख्याल से इन्हें आम बोलचाल की भाषा में छापा गया।
- राजा राममोहन राय ने 1821 से संवाद कौमुदी प्रकाशित किया ओर रूढ़िवादियों ने उनके विचारों से टक्कर लेने के लिए समाचार चंद्रिका का सहारा लिया।
- दो फारसी अखबार भी 1882 से प्रकाशित हुए -
  (i) जाम-ए-जहाँ नामा
  (ii) शम्सुल अखबार

मुस्लिम वर्ग :-

- उत्तर भारत में उलमा, मुस्लिम राजवंशों के पतन को लेकर चिंतित थे।
- उन्हें डर था कि कहीं औपनिवेशिक शासक धर्मांतरण को बढ़ावा न दें, या मुस्लिम कानून न बदल डालें।

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- इससे निपटने के लिए उन्होंने सस्ते लिथोग्राफी प्रेस का इस्तेमाल करते हुए धर्मग्रंथों के फारसी या उर्दू अनुवाद छापे।
- उन्होंने धार्मिक अखबार या गुटके निकाले।
- सन् 1867 में स्थापित देवबंद सेमिनरी ने मुसलमानों को रोजमर्रा का जीवन जीने का सलीका और इस्लामी सिद्धांतों के मायने समझाते हुए हजारों फतवे जारी किये।
- पूरी 19वीं सदी के दौरान कई इस्लामी संप्रदाय और सेमिनरी पैदा हुए।
- धर्म को लेकर सबकी अपनी अपनी व्याख्याऐं थीं।
- हर कोई अपना संप्रदाय बढ़ाना चाहता था और दूसरे के असर को काटना चाहता था।

हिन्दु वर्ग :-

- हिंदुओं के बीच भी छपाई से, खास तौर पर स्थानीय भाषाओं में धार्मिक पढ़ाई को काफी बल मिला।
- 16वीं शताब्दी की तुलसीदास की रामचरितमानस का पहला मुद्रित संस्करण 1810 में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।
- 19वीं सदी के मध्य तक सस्ते लियोग्राफी संस्करणों से उत्तर भारत का बाजार पट गया।
- नवल किशोर प्रेस लखनऊ तथा
  श्री वेंकटेश्वर प्रेस –बंबई से अनेक भारतीय भाषाओं में अनगिनत धार्मिक किताबों छपीं।
- मुद्रित और लाने ले जाने में आसान होने के कारण आस्थावान इन्हें कहीं भी किसी समय पढ़ सकते थे।
- इन्हें अनपढ़ लोगों को भी बड़ी भीड़ में बोल चाल कर भी पढ़ कर सुनाया जा सकता था।
- धाार्मिक पुस्तकें बड़ी तादाद में व्यापक जन–समुदाय तक पहुंच रही थीं।
- इससे विभिन्न धर्मों के बीच में तथा उनके अंदर भी वाद–विवाद तथा संवाद की नई स्थिति बन गई थी।
- लेकिन प्रिंट ने समुदाय क बीच सिर्फ मत मतांतर ही पैदा नहीं किये बल्कि इसने समुदायों को अंदर से जोड़ने का काम भी किया।
- इसके द्वारा देश के विभिन्न हिस्से भी आपस में जुड़ने लगे थे।

अखबार क्यों?

(I) (बॉम्बे–टेलीग्राफ एंड कोरियर, 6 जनवरी 1849)

- पूजा के कृष्णाजी त्रिम्बक राणाडे मराठी का एक अखबार निकालने चाहते हैं, जिसमें स्थानीय दिलचस्पी की तमाम खबरों को जगह मिल सके।
- इसमें :-
  (i) सार्वजनिक
  (ii) वैज्ञानिक अन्वेषण
  (iii) प्राक् विद्या
  (iv) सांख्यिकी
  (v) देश के विभिन्न भागों के बारे में खासतौर से दक्कन की जानकारी होगी।
- ऐसे तमाम लोगों से मदद और संरक्षण का निवेदन है जो ज्ञान के प्रसार व जन कल्याण के इच्छुक

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

है।

(I) (नेटिव-ओपिनियन - 3 अप्रैल 1870)

- देशी अखबारों और राजनीतिक सभाओं की वही भूमिका होती है जो इंग्लैंड में हाउस ऑफ कॉमन्स में विपक्ष की होती है।
- यानी कि वह सरकारी नीतियों की आलोचनात्मक समीक्षा करें।
- लोगों के हित साधनों में अक्षम हिस्सों को निकाल कर नीतियों में सुधार करें।
- सही नीतियों को तेजी से लागू करें।
- इन सभाओं को चाहिए कि वे देश के खास मुद्दों पर सूचनाऐं एकत्रित कर संभव व वांछित सुधारों को लागू करवाये। इन कार्यों का काफी असर होगा।

प्रकाशन के नए रूप

1. उपन्यास

- छापेखाने से नये तरह के लेखन के लिये भूख जागी।
- जैसे-जैसे लोग पढ़ने लगे, छपे हुये पत्रों में अपनी जिंदगी, अपने तजुर्बे, अपने भोगे हुये रिश्तों को देखने की चाहत बलवती होती गई।
- यूरोप में विकसित, उपन्यास नामक यह साहित्यिक विद्या इन जरूरतों को पूरा करने में सक्षम थी।
- जल्दी ही इसने भारत में भी अपनी एक खास भारतीय-शैली तथा शक्ल अख्तियार कर ली।
- इसने अपने पाठकों को अनुभव का नया संसार प्रदान किया।
- इसने मानव जीवन की विविधता का भी बोध कराया।

2. अन्य साहित्यिक विद्यायें

- दूसरी साहित्यिक विद्याऐं जैसे:-

(1) गीत

(2) कहानियाँ

(3) सामाजिक–राजनीतिक मसालों पर लेख ये सब पाठकों की दुनिया का हिस्सा बन गये।

- इनके द्वारा इन्सानी जिंदगी और अंतरंग भावनाओं का स्वरूप तय होता था।

3. दृश्य संस्कृति

- 19 वीं सदि के अंत तक एक नई तरह की दृश्य–संस्कृति भी आकार ले रही थी।
- जैसे–जैसे छापेखाने बढ़ने जा रहे थे छवियों की नकलें या प्रतियाँ अब बड़ी आसानी से बनाई जा सकती थीं।
- राजा रवि वर्मा जैसे चित्रकारों ने आम खपत के लिये तस्वीरें बनाई।
- काठ की तख्ती पर चित्र उकेरने वाले गरीब दस्तकारों ने छापेखानों के नजदीक अपनी दुकानें लगाई, और मुद्रकों से काम पाने लगे।
- बाजार से सुलभ सस्ती तस्वीरें और कलेण्डर खरीदकर गरीब भी अपने घरों और दफ्तरों में सजाया करते थे।
- इन छपी तस्वीरों ने

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

(1) आधुनिकता और परंपरा,
(2) धर्म और राजनीति,
(3) समाज और संस्कृति के विचारों को गढ़ना शुरू किया।



(राजा रवि वर्मा द्वारा बनाया चित्र)

- राजा ऋतुध्वज द्वारा असुरों के चंगुल से राजकुमारी मदलसा को बचाया जाना।
- राजा रवि वर्मा ने मिथकीय कहानियों को लेकर अनगिनत चित्र बनाये, जो उनकी अपने प्रेस रवि वर्मा प्रेस रवि वर्मा प्रेस में छपती थी।

4. व्यंग्य चित्र

LET'S LEARN TOGETHER

- 1870 के दशक तक पत्र–पत्रिकाओं में सामाजिक–राजनीतिक विषयों पर टिप्पणी करते हुये कैरिकैचर और कार्टून छपने लगे थे।
- कुछ में शिक्षित भारतीयों के पक्षिमी–पोशाक और पक्षिमी– अभिरूचियों का मजाक उड़ाया गया।
- कुछ में सामाजिक परिवर्तनों को लेकर एक डर देखा गया।
- साम्राज्यवादी व्यंग्यचित्रों में राष्ट्रवादीयों का मजाक उड़ाया जाता था।
- दूसरी तरफ राष्ट्रवादी भी साम्राज्यवादी सत्ता पर निशाना साधने में पीछे नहीं रहे।

इंडियन शारिवारी का आवरण पृष्ठ



Download Miss Gyan

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- इंडियन शारिवारी 19 वीं सदी के अंत में प्रकाशित होने वाले व्यंग्य और विद्रुप–विधा वाले कई पत्रों में से एक था।
- इसमें साम्राज्यवादी अंग्रेज की छवि ठीक बीचों–बीच में है।
- सत्ता और प्रभुता की प्रतिमूर्ति बना यह,देसी लोगों को, वे क्या करें, क्या नहीं करें इसकी हिदायत दे रहा है।
- उसके दोनों ओर बैठे देसीजन गुलामों की नत मुद्रा में है।
- देसीजन–भारतीयों को व्यंग्य चित्रों के अंग्रेजी पत्र 'द पंच' दिखाया जा रहा है।
- ऐसा लगता है कि जैसे ब्रिटिश मालिक कह रहा हो– "यही सही मॉडल है जाओ इसके भारतीय–संस्करण निकालो।"

LET'S LEARN TOGETHER

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here